International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बिहार की संस्कृति में संगीत:एक अध्ययन

हिमांशु शेखर

शोधार्थी, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत विभाग, संगीत भवन, विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन,पश्चिम-बंगाल

सारांस :

प्रस्तुत लेख में बिहार के समृद्ध लोक संस्कृति में"लोकसंगीत"के महत्व पर प्रकाश गया है। इस राज्य के जितने भी लोक संगीत हैं उन्हें उनके भाव एवं अनुभूति और लोक-सांस्कृतिक अनुष्ठानों आदि के आधार पर अलग-अलग वर्गों में विभाजित कर उनकी व्याख्या की गई है। जैसा कि हम जानते हैं कि लोक संस्कृति से ही लोकसंगीत की उत्पत्ति होती है। अतः इस लेख में बिहार में बोली जाने वाली तमाम बोलियोंमें प्रमुख रूप से - भोजपुरी, मैथिली,मगही,अंगिका और बज्जिका के लोक-संगीत को उनकी संस्कृति के आधार पर प्रमुखता से उजागर करते हुए, वहाँ की विभिन्न शैलियों जैसे - संस्कार गीतों, धार्मिक गीतों और निर्गुणों आदि गीतों और उनके गायन के अवसरों - मुहूर्तों को विशेष रूप से उल्लेखित करते हुए इस लेख को अंतिम रूप दिया गया है।

मुख्य शब्द : बिहार, लोक-संगीत, विद्यापति, संस्कार, रिवाज़ ।

मुख्य लेख:

भारत के उत्तरी हिस्से में बसा, क्षेत्रफल की दृष्टि से बारहवां राज्य 'बिहार' अपनी कला, साहित्य, धर्म और राजनीति जैसे अनेकों उच्च कोटि के विधाओं को अपने में समेटे एवं अपनी वैभवशाली इतिहास एवं अतुल्य सांस्कृतिक विरासत के साथ विश्व में एक विशेष स्थान रखता है। बिहार की भौगोलिक स्थिति की बात की जाए तो उत्तर में हमारा पड़ोसी देश-नेपाल है ,जिसके साथ ऐतिहासिक काल से हमारे मधुर पारिवारिक संबंध रहे हैं। दक्षिण में प्राकृतिक संपदा संपन्न और आदिवासी बहुल राज्य 'झारखंड' है। तो वहीं पूरब में आधुनिक साहित्य , कला और ज्ञान का महत्वपूर्ण केंद्र 'पश्चिम बंगाल' और पश्चिम में देश का सबसे बड़ा राज्य और देवभूमि बनारस,अयोध्या और वृंदावन वाला राज्य 'उत्तरप्रदेश' है।

विश्व में 'सर्वप्रथम' राजतंत्र और राजतंत्र जैसे अन्य शासकीय अत्याचारों के खिलाफ मजबूती से आवाज देने वाली भूमि- "बिहार" के गौरवशाली इतिहास को जाने बिना इसके अन्य किसी पहलू पर टिप्पणी करना इसके पूर्णता के पहले विराम लगा देने जैसा होगा। इसलिए इसके ऐतिहासिक पृष्भूमि को जानना अति आवश्यक हो जाता है। दुनिया को शून्य देने वाले-आर्यभट्ट , राजनीतिशास्त्र के विश्वगुरु - आचार्य चाणक्य (कौटिल्य) ;जिन्होंने भारत को अखंड बनाया और विश्व के सबसे बड़े साम्राज्य के सम्राट के रूप में चन्द्रगुप्त को पदस्थापित किया तथा सम्राट अशोक , भगवान बुद्ध,भगवान महावीर, सिक्खों के दसवे गुरु-गुरु गोबिंद सिंह , भारत में मुद्रा (रुपया) का प्रचलन करने वाले शेर शाह सूरी जैसे कर्मवीरों की धरती और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के लिए अपने वीर सपूतों की बलि देने में अग्रणी रही "बिहार" आज किसी परिचय का मोहताज नहीं। इस प्रदेश का परिचय इसके लोक कला और सांस्कृतिक संपन्नता के पक्ष की व्याख्या किए बिना भी पूर्ण नहीं होगी। इसलिए इनकी अभिव्यक्ति करने वाली विधा "संगीत" को ही इस लेख के केंद्र में रखने का प्रयास किया गया है।

राष्ट्रीय स्तर पर संगीत में प्रतिष्ठित स्थान रखने वाले बिहार का लोकसंगीत तमाम विविधताओं और विशिष्टताओं से संपन्न है। यूं कहें कि बिहार के लोकसंगीत-कोष में प्रत्येक दिवस के लिए एक नया धुन और नया गीत है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। सालभर के क्रियाकलापों को राज्य के लोग संगीत से जोड़ कर नीरसता में भी सरसता का प्रवाह करने का प्रयास करते हैं। विदित है कि हमारे देश में क्षेत्रफल के आधार पर लोकगीतों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। देश के हर राज्य एवं प्रांत में भिन्न-भिन्न प्रकार के लोकगीतों की परंपरा रही है। उसी प्रकार बिहार में भी क्षेत्रीयता के आधार पर विभिन्न प्रकार के लोकगीतों की शैली का मिलना स्वाभाविक है। इस राज्य की खास बात यह है कि यहां "विविधता में एकता" को चरितार्थ करने वाली बातों को बड़ी ही सहजता से देखा एवं समझा जा सकता है।

बिहार के लोक संगीत की बात करें तो सबसे पहले हमें यहां बोली जाने वाली बोलियों के आधार पर इसे बांटना पड़ता है। वैसे तो बिहार में दर्जनों बोलियां है। परंतु यहां पांच बोलियां अथवा भाषाएं प्रमुखता से बोली जाती है और इस आधार पर बिहार का संगीत जिसे हम "बिहारी लोक संगीत" भी कर सकते हैं, प्रमुख रूप से पांच भागों में बांट हुआ है,जो इस प्रकार हैं-1.भोजपुरी, 2.मैथिली, 3.अंगिका, 4.मगही और 5.बज्जिका।

भोजपुरी :-

वैसे तो भोजपुरी मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों ,जैसे वाराणसी, मिर्जापुर, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती और सिद्धार्थनगर आदि तथा बिहार के पश्चिमी इलाके , जैसे शाहाबाद, सारण, चंपारण और छपरा आदि क्षेत्रों में बोली जाती है। परंतु भोजपुरी संगीत हमारे देश के अलावा विदेशों में भी पसंद किया जाता है। बिहार में अन्य जितने भी लोकगीत हैं उनमें भोजपुरी का श्रोतावर्ग सबसे अधिक है। बॉलीवुड के फिल्मों और टीवी धारावाहिकों में भी भोजपुरी संगीत और संवाद का प्रयोग चरित्र और माहौल को आकर्षक बनाने के लिए समय समय पर प्रयोग में लाया जाता रहा है।भोजपुरी लोकगीतों को उनके भाव-रस

और मुहूर्त में प्रयोग के आधार पर कुछ प्रकारों में बांटा जा सकता है। जो इस प्रकार हो सकते हैं- संस्कार-रिवाज गीत, व्रत-पर्व- त्योहारगीत, निर्गुण गीत, जाति अथवा समुदाय संबंधी गीत।

संस्कार-रिवाज गीत:

संस्कार-रिवाज गीतों का संबंध मुख्यता अलौकिक अनुष्ठानों से है। इस संस्कार गीत के मुख्यतः दो स्वरूप हैं- शास्त्रीय गीत और लोकगीत।संस्कार अथवा रिवाज गीत सभी जातियों व जनजातियों द्वारा जन्म से लेकर मरण तक सभी प्रमुख अवसरों पर गाया जाता है। यह गीत हर्षोल्लास के साथ-साथ शोक से भी भरा होता है।जैसे- पुत्र जन्म के खबर पाने पर"खेलौना"और"सोहर", मुंडन अथवा उपनयन/ जनेऊ के समय मुंडनगीत तथा सोहर और खिलौना आदि। विवाह गीत भी होता है जिनमें शिव-पार्वती तथा राम-सीता विवाह के प्रसंग वर्णित होते हैं और इसी को संदर्भ में रखते हुए जिन युवा -युवतियों का विवाह की जा रही होती है, गीतों उनका नाम लेते हुए रश्मों आदि को संचालित की जा रही होती है। जैसे हल्दी/ अपटन (उबटन) गीत, शगुन कुटाई गीत, मटकोर पूजा गीत, कुल देवता पूजा गीत, आम-महुआ विवाह गीत, द्वार पूजा गीत, कन्या निरक्षण गीत, चुमावन गीत, कन्यादान गीत,सिंदूरदान गीत,मझाका गीत, विदाई गीत, समधो मिलाप और डोमकच गीत आदि।

त्योहार/ व्रत या पर्व गीत:

मुख्य रूप से बिहार का व्रत या पर्व है-छठ पूजा , दिवाली, भाई दूज, तीज, नाग पंचमी, गोवर्धन या गोधन पूजा, मधुश्रावणी, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी आदि। ये त्योहार बहुत यहां बहुत ही उल्लास के साथ मनाया जाता है। वैसे इनमें छठ पूजा पूरे विश्व में अपना एक अलग पहचान रखने वाला त्योहार है , जिसमें उगते हुए सूर्य के साथ डूबते हुए सूर्य की भी पूजा होती है,जो स्वयं में विशिष्ट है। विशिष्ट इसलिए क्योंकि उगते हुए सूर्य की पूजा तो लगभग सभी संस्कृतियों में हुआ करती हैं ,परन्तु छठ पर्व हीं दुनिया का एकमात्र ऐसा पर्व है जिसमें डूबते अर्थात् अस्त होते सूर्य की पूजा होती है।इसके अलावा यहां त्योहारों में होने वाले गीतों के कुछ प्रकार हैं-धनतेरस के दिन लक्ष्मी पूजा में विष्णु-लक्ष्मी गीत,एकादशी में तुलसी विवाह गीत , सरापन या गोवर्धन पूजा के दिन शगुन कुटाई गीत , छठ गीत, चकवा गीत,तीज या हरितालिका व्रत में शंकर पार्वती गीत (जिसे हम शिव की लाचारी भी कहते हैं) और बहुरा में शंकर-पार्वती पूजा गीत आदि प्रमुख हैं।

निर्गुण गीत:

यह गीत"निर्गुण"अथवा"वैराग"की भावना से ओत-प्रोत होता है, जिसमें मानव सांसारिक ज्ञान प्राप्ति के पश्चता आसक्ति से विरक्ति के राह की ओर कदम बढ़ाता है। इस शैली को शास्त्रीय गायन के विधा के रूप में स्थापित करने का श्रेय प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक "पंडित कुमार गंधर्व"को जाता है। भरत शर्मा व्यास ,मदन राय, गोपाल राय आदि लोक गायकों द्वारा गाए निर्गुण लोगों के दिलों में आज भी जगह बनाए हुए है।

जाति-समुदाय संबंधि गीत:

सामाजिक व्यवस्था में हर वर्ग एवं जाति का अपना एक विशेष महत्व है। प्रत्येक जाति के अपने कुलदेवता होते हैं , जो विशेष रूप से पूर्व काल में उनके रक्षक या कोई योद्धा होते थे। उन वीरों की वीरगाथा स्थानीय बोलियों में संगीबद्ध तरीके से लोग गाते हैं। ये गीत स्वयं में तमाम विशिष्टताओं से युक्त होते हैं। बिहार में कथित रूप से छोटी जाति मानी जाने वाली कुछ जातियों के गीत भी अपना विशेष स्थान रखते हैं। कुछ विशेष रूप से प्रमुख हैं- अहिर गीत-बिरहा ,अहिरऊआ गीत, लोरीका गीत, (वीरगाथा नृत्य) इसके अलावा दुसाध (पासवान जाति) के अपने अलग गीत होते हैं। जैसे बामात पूजा में गया जाने वाला "देवास" । देवास गीतों में कुछ गीतों का भाव कभी कभार सुनने में डरावना और भय पैदा करने वाला होता हैं। इनके साथ-साथ कहार , धोबी, लोहार, डोम इन सबके भी अपने-अपने जाति गीत होते हैं। इन गीतों के अलावा कुछ और भी प्रमुखता से गाए जाते हैं। वे हैं-मौसमी संबंधी गीत:हिंदी वर्ष के पहले माह चैत्र या चैत के पहले दिन
होली का त्योहार देश भर में काफी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन गाए जाने वाले गीतों को बिहार में होरी या फगुआ गीत कहते हैं। इन गीतों में विशेष रूप से पारंपरिक गीत ही होते है, जिनमें वृंदावन और भगवान कृष्ण की विशेष चर्चा होती है। लेकिन नए दौर में इसमें देवर - भाभी और जीजा - शाली संबंधित मजाकिया संवादों को गीतों के रूप में देखा जा सकता है। इसके अलावा चैत्र माह में चैता , चैती या चैतवार गानों का भी काफी चलन और रिवाज है। श्रावण या सावन मास में कजरी गायन का विशेष चलन है।पेशा गीत: किसी कार्य संपादन के समय जो गीत गाए जाते हैं वे श्रम गीत , व्यवसाय गीत या क्रिया गीत की श्रेणी में आते हैं। चक्की चला कर गेहूं पीसने के समय स्त्रियां लगनी गीत अथवा जातसारी गीत गाती हैं। उसी प्रकार धान रोपण के समय रोपनी गीत"चांचर गीत"और"बरमासा"गाने की परंपरा है।

भजन गीत:

देवी देवताओं की आराधना से संबंधित गीत भजन या श्रुति गीत कहलाते हैं। इन गीतों के धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व के साथ-साथ मांगलिक महत्व भी है। इनमें ईश्वर के सगुण एवं निर्गुण दोनों स्वरूपों का वर्णन मिलता है। सगुन गीतों में गोसौनी गीत या (शक्ति और शिव विषयक गीत जोकि मिथिला क्षेत्रों में अधिक होता है) , नचारी, महेशवाणी, कीर्तन, विष्णुपद, पराती, सांझा, भांग के गीत, शीतला माई के गीत आदि। भोजपुरी के इन गीतों को गाने वालों में विशिष्ट प्रतिष्ठा और सम्मान रखने वाले भोजपुरी लोकगीतों के पितामह भिखारी ठाकुर के साथ-साथ महेंद्र मिश्र , शारदा सिन्हा, भरत शर्मा 'व्यास' और नए दौर में मनोज तिवारी और पवन सिंह जैसे गायक शामिल हैं।

मैथिली:-

भोजपुरी लोकगीतों के बाद बिहार में सबसे अधिक एवं लोकप्रिय लोक संगीत मैथिली लोक संगीत है। मैथिली का साहित्य एवं संगीत बिहार के अन्य चार बोलियों की तुलना में समृद्ध एवं विकसित है। मैथिली बिहार , झारखंड और नेपाल के तराई क्षेत्रों में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से है। इसका प्रमुख स्रोत संस्कृत भाषा है,जिसके शब्द 'तत्सम' एवं 'तद्भव' रूप में मैथिली में प्रयुक्त होते हैं। मैथिली भाषी प्रमुख क्षेत्र हैं- दरभंगा , मधुबनी, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज, शिवहर, भागलपुर, मधेपुरा, अररिया, सुपौल, वैशाली, सहरसा, रांची, बोकारो, जमशेदपुर, धनबाद और देवघर। नेपाल के 8 जिलों धनुष, सिराहा, सुनसरी, सरलाही, सप्तरी, महतारी, मोरंगा और रोहतक में भी यह बोली जाती है। [1]अन्य लोक संगीत की तर्ज पर मैथिली संगीत को भी हम उनके भाव ,रस एवं गायन समय-काल के आधार पर कुछ वर्गों में विभाजित कर सकते हैं,जैसे-

1. भक्ति गीत 2. रितु कालीन गीत 3. वार्षिक क्रियाकलापगीत 4. गौरव-गाथा गीत 5.प्रेम-सौंदर्य भाव गीत 6. ज्ञानपरक गीत

भक्ति गीत:

मिथिला अपनी भक्ति भावना,धार्मिकता एवं विद्या के माध्यम से भक्ति भाव को विश्व पटल पर रखने के लिए बहुत पहले से ही अपना एक सम्मानित स्थान रखता है। अतः यहां के लोकगीतों में भक्ति गीतों की प्रधानता हमेशा से ही रही है। मैथिली कवि एवं ग्रंथकार "विद्यापति"ने अपने संगीत रचित ग्रंथों में बड़ी ही सुंदर एवं मनोहर भावों से भक्ति भाव को उल्लेखित किया है। अपने गीतों में विद्यापति राधा-कृष्ण को मथुरा से वृंदावन ले जाते हैं और यहीं पर कृष्ण ,राधा और गोपियों के साथ अठखेलियां करते हुए कदम के पेड़ पर चढ़ जाते हैं , तो कभी जमुना में गेंद उठाने के बहाने नाग-नाथन करके बांसुरी बजाते हुए निकलते हैं। साथ ही कभी-कभी कृष्ण मीरा के प्रभु बन जाते हैं। मिथिलावासी काली , दुर्गा, विद्या, जाया आदि देवियों को अपनी मातृ देवी मानते हैं और इनकी पूजा-अर्चना के गीत गाते हैं। इसके अलावा सूर्यदेव ,भगवान गणेश, भगवान विष्णु, शिव, शक्ति आदि की पूजा भी करते हैं। मिथिला के लोग वैसे तो शक्ति के पुजारी के रूप में विख्यात है , परंतु शिव उनके आदर्श देव है।मैथिली भक्ति गीतों को निम्नलिखित भागों में विभाजित करके देखा जा सकता है-

भजन कीर्तन:-भगवान विष्णु और उनके दो रूपों (राम एवं कृष्ण) गंगा, शिव और शक्ति के गुणगान किए जाते हैं।

शिव भक्ति गीत:-मिथिलावासी किसी भी देवता की अपेक्षा शिव के अधिक भक्त होते हैं । शिव को प्रसन्न करने के लिए नाचारी और महेशवाणी गाते हैं ।

सांझा:-ये गीत सायां कालीन गाया जाने वालें गीत होते हैं । इन गीतों में लक्ष्मी एवं शक्ति के विभिन्न स्वरूपों जैसे काली , भवानी, ज्वालामुखी, भगवती और गोसवनी आदि देवियों को प्रसन्न करने के लिए गाया जाता है।

प्राती:-इन गीतों में के माध्यम से प्रातः कालीन देवी देवताओं को प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता है। पराती (प्राती) मुख्य रूप से भैरवी प्राति , जयजयंती पराती और विभाग प्राति आदि शैलियों में गाई जाती है।

ऋतुकालीन गीत:

मानवीय संवेदनाओं में हलचल पैदा होना एक आम बात है । ये संवेदनाएं अनेक अंदरूनी एवं बाहरी रासायनिक एवं भौतिक परिवर्तनों से प्रभावित होती हैं। इन अंदरूनी भावनाओं एवं संवेदनाओं में परिवर्तन के मुख्य कारण "ऋतुएं" भी होती हैं। अतः ऋतुओं के आगमन के पश्चात संवेदनाओं का झंकृत होना और इससे उमड़ी मन की भावनाएं होठों से गीत बन कर निकलती हैं और इसलिए ये गीत क्षेत्र , भाषा और मानवीय संवेदनाओं के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती है। मैथिली ऋतुकालीन लोकगीतों में श्रृंगार, विरह, वेदना, अभिसार, असहायता, लाचारी और विवशता आदि का महीनों एवं ऋतुओं के आधार पर वर्णन मिलता है। यहां के गीतों में कभी-कभी किसी खास महीने का विशेष महत्व भी देखने को मिलता है। इसके अलावा इन गीतों में निराशा एवं प्रेम में विफल प्रेमी-प्रेमिका एवं पति के परदेश (दूसरे देश) चले जाने की स्थिति में पत्नी के करुण एवं वेदना युक्त भाव ,गीत बनकर पर्यावरण में एक टीस-सा तरंग उत्पन्न कर देते हैं। इतना ही नहीं , मैथिली गीत में कृषि एवं इन क्रियाओं संबंधित गीत भी गाए जाते हैं। इन गीतों में चौमासा, छौमासा और बरमासा आदि गीत गाए जाते हैं। तमाम संदेशों से युक्त इन गीत के माध्यम से यह भी बताने की कोशिश की जाती है किसी खेतिहर या किसान को कब और कैसे खेती करनी चाहिए। इसके अलावा मैथिली लोकगीतों में चरित्र संबंधी गीत भी गाए जाते हैं। इन गीतों के माध्यम से चरित्रवान स्त्रियों की चरित्र-परीक्षा अथवा बदचलन महिलाओं के अवैध प्रेम-प्रसंग को दर्शाने वाले गीत भी गाए जाते हैं। इन गीतों में माता सीता और सूर्पनखा जैसे चरित्रों का उदाहरण मिलता है।

वार्षिक क्रियाकलापगीत:

वार्षिक कार्यक्रमों को दर्शाने वाले गीतों में मैथिली गीत दो प्रकार के होते हैं-पहला-कृषि से संबंधित गीत: -कृषि संबंधित गीतों में मुख्य रूप से कृषि के विभिन्न चरणों जैसे खेत की जुताई -बुवाई , खाद - बीज डालने की प्रक्रिया , फसलों की कटाई आदि से संबंधित गीत होते हैं। मिथिला के लोगों के बीच मौसम विज्ञानी और संत घाघ दास

[1]. मैथिली भक्ति काव्य ,लालती कुमारी, अनुभव पब्लिशिंग हाउस

और डाक की लोकोक्तियां आज भी बहुत उपयोगी सिद्ध होती। यहां के किसान दोहे एवं पंक्तियों के रूप में प्रचलित लोक कहावतों के आधार पर हवा का रुख , वर्षा आने ओर जाने की अवधि, सूर्य की रोशनी, पशु - पक्षियों की आवाज एवं उनका मनुष्य के साथ संबंध आदि का पूर्वानुमान कर सकते हैं।दूसरा-व्रत एवं त्योहार संबंधित गीत: - मिथिलावासी के स्वभाव तो बड़े ही धार्मिक एवं पर्व त्योहारों को लेकर उत्साहित प्रवृत्ति के होते हैं अतः पंचांग या 'पतरा'में निर्धारित पूरे वर्ष भर का व्रत एवं त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। पंचांग के अनुसार ये त्यौहार चैत्र मास से शुरू होकर पूरे साल तक चलते हैं। इन्हीं त्योहारों में विभिन्न प्रकार के गीत गाए जाते हैं जिन्हें व्रत एवं त्यौहार संबंधी गीतों की श्रेणी में रखा गया है। यहां के प्रमुख त्योहारों में रामनवमी , वटसावित्री, मधुश्रावणी, दुर्गा पूजा, कोजागरा, दीपावली, छठ, सामा - चकवा और दहा आदि मुख्य हैं।

गौरव गाथा गीत:

इन श्रेणी के गीतों में मिथिला क्षेत्र का इतिहास और उनसे जुड़ी धार्मिक आस्था और आध्यात्मिक विश्वास के गाथाओं का वर्णन मैथिली लोक संगीत में देखने को मिलता है। मिथिलावासी जिन महान व्यक्तियों की कथा-गाथा करते हैं ,उनमें प्रमुख रूप से गोपीचंद, अल्लाह-रुदल, राजा सलदेश, दीनभद्री,कारिख महाराज, अजुरा, कोरोला वीर और मैनावती नेवार आदि महान विभूतियां हैं।

प्रेम-सौंदर्य भाव गीत:

इस प्रकार के गीतों का संबंध मिथिलावासी के साथ बिल्कुल चोली-दामन जैसा रहा है। विद्यापति की रचनाओं में राधा कृष्ण के प्रेम एवं सौंदर्य के जो भाव दिखतें हैं , वह इस मिथिलांचल के भाव के व्यक्त करने के लिए पर्याप्त हैं। इसके अलावा महेशबानी , नचारी आदि का भी संगम इन गीतों में देखने को मिलता है।प्रेम एवं सौंदर्य भरे गीतों मे प्रेम की सहजता, प्रेमी मन की अकुलाहट, नायक एवं नायिका का अभिसार के लिए छटपटाना ,एक नायिका एवं नायक के मन में प्रेम के प्रति उभरते विचारों की तांती और सौंदर्य इत्यादि का वर्णन होता है। तिरहुत गीत , जो मूलतः वीरह और मिलन के भाव को दर्शाने वाला गीत हैं , का भी मिथिला क्षेत्र में काफी बोलबाला है। तिरहुत गीतों में रास, ग्वालरी, मान, बटगवनी आदि प्रमुख हैं।

ज्ञान परक गीत:

मैथिली लोकगीतों में ऐसे अनेक गीत हैं जिनसे ज्ञानवर्धक होती है। इन गीतों में जीवन में आने वाली हर परिस्थिति से सामना करने योग्य बातें होती हैं जिनमें स्वास्थ्य,दिनचर्या,भक्ति-भाव, रूप,श्रृंगार,कृषि आदि संबंधी ज्ञान की प्राप्ति होती है ।उदाहरणार्थ -"आसीन-कार्तिक जे केहू सोए, ताके लिए विधाता रोए" ज्ञान-चासनी में डूबे इस कहावत को उदहारण स्वरूप हम देखते हैं ,जिसमे कार्तिक मास के दिन के समय न सोने की बात की जा रही है और उसके नकारात्मक परिणामों को बताया गया है।

अंगिका:-

अंगिका "अंग" शब्द से बना है जो इतिहास में अंगप्रदेश के रूप में प्रसिद्ध था । यह वर्तमान में भागलपुर के आसपास का क्षेत्र है। अंग क्षेत्र में बोली जाने भाषा को "अंगिका" का नाम दिया गया है। इसके बोलने वालों की संख्या 30 मिलियन के आस-पास है। अंगिका को लोग "छी- छा" के नाम से भी जानते हैं। यह भाषा बिहार के पूर्वी-उत्तरी व दक्षिणी क्षेत्र-भागलपुर, मुंगेर, खगड़िया, बेगूसराय, पूर्णिया, कटिहार, अररिया तथा पश्चिमी बंगाल और झारखंड के कुछ भागों जैसे गोंडा ,साहिबगंज, पाकुड़, दुमका, देवघर, कोडरमा, गिरिडीह आदि क्षेत्रों में बोली जाती है। इसके अलावा यह नेपाल के तराई क्षेत्र में भी बोले जाने वाली भाषाओं में शुमार है। अंगिका को कुछ भाषा वैज्ञानिक मैथिली भाषा का ही अंग मानते हैं। इसका कारण यह है कि मैथिली एवं "अंग" की राजनीतिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक स्थिति काफी मिलते-जुलते हैं। यदि बात की जाए लोक संगीत की तो यहां भी लगभग वही गीत गाए जाते हैं जो मिथिला क्षेत्रों में प्रचलित हैं जिसकी विस्तार पूर्वक व्याख्या ऊपर की जा चुकी है।

मगही:-

मगही को बोलने वाले लोगों की संख्या लगभग 30 मिलियन के आसपास ही है। मगही भाषा बिहार के आठ ,जिलें-गया,पटना,जहानाबाद,औरंगाबाद, नालंदा,नवादा,शेखपुरा,अरवल उसके बाद झारखंड का हजारीबाग ,चतरा,कोडरमा,जामताड़ा,बोकारो, धनबाद,गिरिडीह और पश्चिम बंगाल का मालदा आदि क्षेत्रों में बोला जाता है। इस भाषा के गीत महत्वपूर्ण त्योहारों जैसे छठ , दिवाली, होली, बसंत-पंचमी आदि में गाई जाती है। धोबी नृत्य , झूमर, झिझिया, जाट - जाटिन, सामा - चकवा डमकच आदि लोक संगीत भी मगध क्षेत्रों में मिलते हैं। मगही भाषा की मिठास और इसके शब्दो में भाव सम्प्रेषण की क्षमता लोगों के दिल को आहलादित कर देती है । यही कारण है कि इस भाषा के लोक गायक श्रोताओ के दिलो में बहुत कम समय में बस जाते हैं। मगही क्षेत्र का लोक संगीत बहुत हद तक भोजपुरी लोक संगीत एवं संस्कृति से मेल खाता है। इसलिए इस क्षेत्र का लोक संगीत भी भोजपुरी लोक संगीत जैसा ही होता है। अंतर सिर्फ यहां की बोली और उसके रस्मों - रिवाजों की प्रक्रिया में भिन्नता से होती है। अन्यथा वही भोजपुरी संगीत यहां भी होता है । मगध के लोक बाद्य यंत्रो में ढोलक , झाल, करताल, हारमोनियम, वांसुरी, नगाड़ा, तासा खंजड़ी, चिमटा आदि का प्रमुख स्थान हैं। ढोलक लोक जीवन के हर संस्कार से जुड़ा हुआ वाद्य यंत्र है। मगध के गाँवों में ढोलक के एक से बढ़कर एक अच्छे वादक कलाकार हैं।

बज्जिका:-

बज्जिका, बिहार के उत्तर मध्य क्षेत्र एवं नेपाल के तराई क्षत्रों खासकर रोहतक एवं सलोही ^ जिला में बसने वाले लोग बोलते हैं। उत्तर बिहार में बोली जाने वाली दो अन्य भाषाएं - भोजपुरी एवं मैथिली के बीच के क्षेत्रों में बज्जिका सेतु रूप में बोली जाती है। बज्जिका को स्वतंत्र अस्तित्व दिलाने के लिए पंडित राहुल संस्कृतायन जिनकी रचना "मात्री भाषाओं की समस्या" का योगदान बहुत सराहनीय रहा है। आज इस भाषा को लुप्तप्राय भाषा की श्रेणी में डाल दिया गया है। परंतु सभी भाषा में बोलियों को एक समान स्तर पर देखने वाले कुछ विद्वानों ने बज्जिका में अनेक रचनाएं की है। क्षेत्र एवं बोली के संगीत की बात की जाए तो यहां भोजपुरी एवं मैथिली का लोक संगीत ही संयुक्त रूप से पाया जाता है। इसकी व्याख्या उपरोक्त भोजपुरी एवं मैथिली संगीत में की जा चुकी है।

संदर्भ सूंची:

1. डॉ कुमारी, रूबी, बिहार के संगीत घराने,कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी,2016
2. डॉ कुमारी, अनामिका, बिहार के लोक संगीत में वाद्यों की परम्परा एवं प्रयोग, कला प्रकाशन, 2015
3. श्री सिंह, राम इक़बाल 'राकेश' हिन्दी साहित्य सम्मेलन,प्रयाग ,2012
4. Nambisan Vijay, Bihar in the eye of the beholder, Penguin Book,2000,ISBN-978-0-14-029449-1
5. Music of Bihar https://en.m.wikipedia.org/wiki/Music_of_Bihar#:~:text=The%20classical%20music%20in%20Bihar,of%20the%20Hindustani%20classical%20music.&text=The%20historical%20ballads%20dealing%20with,the%20plain%20tracts%20of%20Bihar
6. Folk Songs of Bihar https://abhipedia.abhimanu.com/Article/State/NDU4NgEEQQVVEEQQVV/Folk-Songs-of-Bihar-Bihar-State
7. बिहारी संस्कृति, संस्कार और पहचान को सलाम - बिहारी संस्कृति, संस्कार और पहचान को सलाम - https://m.livehindustan.com/news/article/article1-patna-bihar-day-%2Farticle1-patna-bihar-day-croll
8. Bihar Documentry, Every Bihari must watch" , YouTube, https://youtu.be/ZHLiLJctuBY
9. Bihari Culture https://en.m.wikipedia.org/wiki/Bihari_culture#:~:text=Bihari%20culture
10. Pathak,Prabhu Nath, Society and Culture in Early Bihar,C.A.D.-200-600, Commonwealth Publishers,1988
11. "The Bihar Official Language Act,1950, (Cabinet Secretariat Department, Government of Bihar)
12. "बिहारी संस्कृति, संस्कार और पहचान को सलाम", हिंदुस्तान ई-पेपर,22/03/2012